8th class sanskrit Solution प्राचीनाः विश्वविद्यालयः(पुराने विश्वविद्यालय)

अभ्यासः

मौखिकः –

1. अधोलिखितानां पदानाम् उच्चारणं कुरुत।

उत्तरम् – शास्त्राणाम् , तस्यैव , निष्पक्षभावेन , परीक्षानन्तरमेव , दशसहस्त्राणि , भग्नावशेषेण , धनलुण्ठनाशया , गौरवभूतौ ।

2. अधोलिखितानां पदानाम् अर्थं वदत ।

उत्तरम् – इति = ऐसा । यत्र = जहाँ । जायते = होता है । भूयोभूयः = बार – बार । अधीतवन्तः = अध्ययन करते रहे । भग्नावशेषः = खण्डहरों । पञ्चमशतके = पाँचवीं सदी में । खीष्टाब्दे = ईसवी सन् में । बबैरैः = क्रूरों के द्वारा । उभौ = दोनों ।

3. निम्नलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरम् एकेन पदेन लिखत।

(क) तक्षशिला विश्वविद्यालयः कस्मिन देशे आसीत् ?

उत्तरम्- गान्धार देशे ।

(ख) सम्प्रति तक्षशिलाया : भग्नावशेषाः कुत्र सन्ति ?

उत्तरम् – रालवपिण्डी ।

(ग) मौर्य राज्यस्य संस्थापकः कः आसीत् ?

उत्तरम् – चन्द्रगुप्तः ।

(घ) नालन्दा विश्व – विद्यालयस्य भग्नावशेषाः कुत्र सन्ति ?

उत्तरम्- नालन्दायाम् ।

(ङ) केन आक्रमणेन नालन्दा विश्वविद्यालयस्य विध्वंसो जाः ?

उत्तरम् – बबरैः ।

4. कोष्ठात् शब्दं चित्वा रिक्तस्थानाम् पूरयत।

(क) षष्ठशतके ईस्वीपूर्वे.... विश्वविद्यालयः अवर्तत । (ख) नालन्दा विश्वविद्यालयः ..... एव आसीत् । (ग) कुमारगुप्तः ..... विश्वविद्यालयस्य स्थापनां कृतवान।

(घ) हुएनसांग

(ङ) धर्मपाल :

उत्तरम्—

(क) तक्षशिला , (ख) बिहारे , (ग) नालंदा , (घ) चीन , (ङ) पाल ।

5. निम्नलिखितानां शब्दानां प्रयोगेण संस्कृते वाक्यानि रचयत-

अभिधानम् , तक्षशिला , चन्द्रगुप्तः , हुएनसांगः , अध्यापकः ।

उत्तरम् – अभिधानम् = बिहारे पुरा नालन्दा विश्वविद्यालयः अभिधनं शिक्षा केन्द्रम् आसीत् । तक्षशिला = तक्षशिला विश्वविद्यालयः गान्धर देशे आसीत् ।

चन्द्रगुप्तः = चन्द्रगुप्तः मौर्यवंशस्य संस्थापकाः आसीत् ।

हुएनसांग = हुएनसांग चीन देशस्य आसीत् । अध्यापकः = अध्यापक : छात्रान् पाठयति ।

https://www.evidyarthi.in/

6. मेलनं कुरुत

(क) नालन्दा विश्वविद्यालयः (1) मौर्यवंश (ख) हुएनसांग. (2) बिहार : (ग) चन्द्रगुप्तः (3) पालवंशः (घ) तक्षशिला विश्वविद्यालय (4) चीनी यात्रिक : (ङ) धर्मपाल : (5) गान्धारः उत्तरम्-

(क) (2) । (ख) (4) । (ग) (1) । (घ) (5) । (ङ) (3) ।

7. रिक्तस्थानानि पूरयत-

उत्तरम्

एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन।(क) पाठयति	पाठयतः	पाठयन्ति
(ख) लभते	लभेते	लभन्ते		
(ग) वर्तते	वर्तते	वर्तन्ते		
(घ) आसीत्	आस्ताम्	आसन्		
(ङ) अस्ति	स्तः	सन्ति		

8. अधोलिखितानां पदानां सन्धि विच्छेदं वा कुरुत प्रश्नम्

उत्तरम्

(क) इत्यादयः (क) इति + आदयः

(ख) अस्य + अपि (ख) अस्यापि

(ग) छात्राश्च. (ग) छात्रा : + च

(घ) तस्य + एव. (घ) तस्येव

(ङ) अत्र + अनेके (ङ) अत्रानेके

(च) यदि + अपि (च)यद्यपि

(छ) विकासोऽपि (छ) विकास : + अपि (ज) अत्रापि (ज) अत्र + पि

9. ‘ सत्यम् ‘ अथवा ‘ असत्यम् ‘ लिखत

यथा – विश्वविद्यालयः ज्ञानकेन्द्राणि भवन्ति । “- सत्यम् ”

प्रश्नोत्तर

(क) तक्षशिलाविश्वविद्यालयः गान्धारदेशे आसीत् ।

– ” सत्यम् ”

(ख) मौर्यराजस्य संस्थपकः धर्मपालः आसीत् । -असत्यम्

(ग) नालन्दा विश्वविद्यालयः पाकिस्तान देशे आसीत् । -” असत्यम् ”

(घ) विक्रमशिला विश्वविद्यालयः धर्म पालेन संस्थापितः ।- ” सत्यम् ”

(ङ) नालन्दा विश्वविद्यालय बर्बराणाम् आक्रमणेन विध्वंसो जातः ।- “ सत्यम् ”

10. उदाहरणानुसारेण विभक्ति वचन – निर्णयं कुरुत यथा – गृहेषु विभक्तिः वचनम् सप्तमी बहुवचनम् प्रश्नोत्तर

(क) शास्त्राणाम्	षष्ठी	बहुवचनम्
(ख) छात्रान्	द्वितीया	बहुवचनम्
(ग) ज्ञानस्य	षष्ठीम	एकवचनम्
(घ) भारते	सप्तमी	एकवचनम्
(ङ) देशस्य	षष्ठी	एकवचनम्

https://www.evidyarthi.in/

(च) वर्षाणि प्रथमा बहुवचनम्
(छ) आक्रमणेन तृतीया एकवचनम्
(ज) बर्बराणाम् षष्ठी बहुवचनम्

12. हिन्दी भाषायाम् अनुवदत

उत्तरम्

(क) तक्षशिला विश्वविद्यालय गान्धार देश में था । (ख) नालन्दा विश्वविद्यालय का कुमार गुप्त के द्वारा स्थापना की गयी ।
(ग) यहाँ सुयोग्य अध्यापक लोग छात्रों को पढ़ाते हैं ।
(घ) तक्षशिला विश्वविद्यालय छठी शताब्दी ईसा पूर्व में ही स्थापित किया गया ।
(ङ) धर्मपाल पालवंशीय राजा थे ।

योग्यता – विस्तारः

सभ्यता और संस्कृति की दृष्टि से विश्व में चार देश महत्त्वपूर्ण रहे थे जो आज भी अपने अतीत पर गौरवान्वित हैं । ये हैं – मिस्र , चीन , भारत तथा यूनान । इनमें भारत को ' विश्वगुरु ' कहा जाता था क्योंकि यहाँ के प्रतिष्ठित विद्वानों ने अपनी प्रतिभा से विश्व के मानवों को आकृष्ट किया था । प्राचीन ऋषियों के आश्रम ही ज्ञान के केन्द्र नहीं थे अपितु कालान्तर में राजाश्रय से कुछ विद्यापीठों की स्थापना भी हुई । इनमें विविध विषयों के प्रतिभाशाली शिक्षक एवं दूर – दूर के ज्ञानार्थी निवास करते थे ।
इतिहास में सबसे पहला विद्यापीठ पंजाब (पाकिस्तानी पंजाब) की तक्षशिला में था । यहाँ उत्खनन से विद्यापीठ के अवशेष पाये गये हैं । यूनानी लेखकों ने भी इसकी चर्चा अपने विवरणों में की है । कहते हैं प्रसिद्ध आयुर्वेदज्ञ ' जीवक ' तथा राजनीतिशास्त्री ' चाणक्य ' ने यहीं शिक्षा प्राप्त की थी । जीवक के चमत्कारी कार्यों का वर्णन बौद्ध ग्रन्थों में , विशेष रूप से " विनयपिटक " में मिलता है । चाणक्य को कौटिल्य या विष्णुगुप्त भी कहते हैं । उनका अर्थशास्त्र संस्कृत राजशास्त्र का बहुत प्रामाणिक और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है ।
वर्तमान भारतीय क्षेत्र में बिहार राज्य के दो प्राचीन विद्यापीठ बहुत विख्यात थे । चीन , तिब्बत इत्यादि देशों से मेधावी छात्र आकर यहाँ अध्ययन करते थे । नालन्दा विश्वविद्यालय के अवशेष 1860 ई ० के दशक में उत्खनन से अनावृत हुए थे । इन्हें देखकर लोग चकित रह गये कि कितने योजनाबद्ध रूप में यहाँ आवासीय व्यवस्था की गयी थी । इसकी स्थापना पाँचवीं शताब्दी में हुई थी । चीन के तीन प्रसिद्ध यात्रियों ने इसका विवरण दिया है जो यहाँ आकर कई वर्षों तक अध्ययन के लिए रहे थे । फाह्यान चन्द्रगुप्त द्वितीय के काल में (प्रायः 400 ई .) आया था । उसके यात्राविवरण खण्डित रूप में मिले हैं । सबसे अधिक प्रभावशाली विवरण हुएनसांग ने दिया है जो पूरे भारत में घूमा था (629-643 ई .) । नालन्दा विश्वविद्यालय में दो बार आकर उसने सैकड़ों पुस्तकों की पाण्डुलिपियाँ बनाई और उन्हें वह चीन ले गया था । इत्सिंग (671 ई . के आसपास) ने नालन्दा में पढ़ाये जाने वाले विषयों का विशेष रूप से विवरण दिया है तथा शिक्षणपद्धति पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला है । इन तीनों यात्रियों के कारण नालन्दा से तिब्बत और चीन का सांस्कृतिक आदान – प्रदान बहुत अधिक बढ़ा जो पाँच – छह सौ . वर्षों तक चलता रहा । नालन्दा का विध्वंस 1200 ई . के आस – पास बख्तियार खिलजी की बर्बर सेना ने किया तथा यहाँ के पुस्तकालय जला दिये । इसका वर्णन तिब्बती यात्री " धर्मस्वामी " ने किया है ।
नालन्दा विश्वविद्यालय के समकालीन भागलपुर के निकट विक्रमाशिला विश्वविद्यालय भी सहयोगी के रूप में विकसित हुआ था । यहाँ भी बौद्ध धर्म तथा अन्य शास्त्रों का अध्ययन – अध्यापन होता था यद्यपि यह नालन्दा के समान व्यापक नहीं था । तिब्बती विवरणों में विक्रमशिला की तथा याहँ के प्रसिद्ध विद्वानों की बहुत प्रशंसा की गयी है । इसका उत्खनन स्वतंत्र भारत में किया गया जिससे बहुमूल्य साम्रगी प्राप्त हुई है ।।

https://www.evidyarthi.in/